REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

अभिशाप्त स्त्री जीवन की करूण गाथा –'दोहरा अभिशाप'

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख , देगलूर महाविद्यालय, देगलूर , ता.देगलूर जि. नांदेड.

प्रस्तावना :

दोहरा अभिशाप आत्मकथा दलित नारी जीवन की संघर्षरत करूण गाथाहै। एक तरफ स्त्री होने का तो दुसरी तरफ दलित होनें का अभिशाप भोगने वाले स्त्री जीवन की त्रासदी को आत्मकथा उजागर करती है। भारतीय संकुचित परंपरा और मानसिकताने स्त्री जीवन को अभावपुर्ण, पीडाग्रस्त एवं दयनीय बनाया तो दुसरी ओर पुरूषी मानसिकताके अधिन होकर उनकी गुलामी सत्ता को स्विकार करनेवाली स्त्रीं ने ही स्त्री जीवन को खोखला, एवं रूढिवादी बना दिया है। भारतीय संविधान ने अनेको अधिकार स्त्रियों को दिए, परंतु यह उतनाही सच है कि समाज, परिवार एवं घर में वह आज भी शोषण, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, अवमानना तथा गुलामी से आझाद नहीं हो पाई हैं। पितृसत्ताक समाज व्यवस्था से पोशित मानसिकता ने स्त्री को कम ऑका और उसके साथ सौतेला व्यवहार किया। समाज एवं परिवार द्वारा प्राप्त सौतेले व्यवहार और घृनित मानसिकता को आत्मकथा के माध्यमसे कौशल्या बैसंत्री ने उघडा है।

महिलाओंका आर्थिक, शारिरीक, वैचारीक एवं मानसिक शोषण, असमानता का भाव, स्त्रीयों को विकास का पर्याप्त अवसर न देना, स्त्री सानर्थ्य एवं क्षमता को कम आंकना, निर्णय प्रक्रिया में दोयम स्थान, घर–परिवार तक स्त्रीयों को सिमित रखनेकी दुषित मानसिकता आदि समस्यावों को आत्मकथा के माध्यमसे उद्घाटित करने का साहसी कार्य कौशल्या बैसंत्री ने किया है। दलित और स्त्री होने की पींडा और वेदना क्या होती है इसका चित्रण आत्मकथा में है। दलित समाज में अशिक्षा, बेरोजगारी, अंधश्रध्दा, निम्न आर्थिक स्थिती, एवं रीतिरिवाजो के कारण स्त्रीयों का शोषण होता है और उन्हे संपूर्ण जीवन आभावों में जीना पडता है तो दुसरी तरफ स्त्री होने का दर्द हैं। पुरूष की निर्ममता एवं असंवेदनशीलता, वासनांधता, ओर पुरूषी अहंकार के कारण उपजी दासता वृत्ती आदी के कारण एक दलित स्त्री दोहरे अभिशाप में जीती हैं। इसी दोहरे शोषण एवं अभिशाप के आधारपर लेखिकाने 'दोहरा अभिशाप' यह शिर्षक अपनी आत्मकथा को दिया हैं। कौशल्या बैसंत्री ले दलित समाज के रीतिरिवाज खानपान, छुआछुत, अंधश्रद्धा, सामाजिक मान्यता, आचार–विचार आदि को अभिव्यक्त किया है।

शाल्य जीवन से ही अस्पृश्यता का अघात झेलती लेखिका संघर्ष करती हुई, समाज में व्याप्त विकृतियों, रूढी–परंपराओं और विषमताओं का साहस के साथ विरोध करती हुई शिक्षा ग्रहण करती हैं। शिक्षा ने स्त्रियों को स्वधिकार और स्वचेतना के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दि, और परिणाम स्वरूप वह परिवारिक एवं सामाजिक शोषण तथा अवेहलना के खिलाफ आवाज उठानें लगी और यही विरोध, आवाज और अक्रोश आत्मकथा में उजागर हुआ है लेखिका एक उच्च शिक्षित देवेंद्रकुमार से सुंदर एवं शोषण रहित जीवन की कामना हेतू बडे अरमानों के साथ विवाह करती है, परंतु बाकी पुरूषो के समान ही शारिरीक भुख मिटाने और नौकरो की तरह घर के सारे काम तक लेखिका को सिमित रखा जाता हैं। प्रताडना, अपमान, शोषण, घृणा और

तिरस्कार की शिकार लेखिका निर्णय करती हैं की पति के प्रताडना को सहन नहीं करेगी और पति से अलग होकर सन्मानपुर्वक जीवन जीने का निर्णय लेती हैं।

लेखिका अपने हिस्से के शोषण को और समाज की घृनित मानसिकता को आत्मकथा के माध्यमसे उजागर करने का साहस करती हैं ताकी अन्य स्त्रियों को वह अन्याय अत्याचार के विरोध में आवाज उठाने को प्रेरित कर सके। अनेको विरोधो के बावजुद लेखिका ने आत्मकथा में अपने त्रासदी को उघाडा उनके पति, भाई, और पुत्र ने भी विरोध जताया क्युं की वे सारे पुरूषी मानसिकतासे ग्रस्त थे। उन्हे भी लगता होगा की स्त्री जीवन बना ही दासता और पुरूषों की अधिनात के लिए। लेखिका अपनी भुमिका में कहती, ''पुत्र भाई, पति सब नाराज हो सकते है, परंतु मुझे भी स्वतंत्रता चाहिए कि मै भी अपनी बात समाज के सामने रख संकु मेरे जैसे अनुभव और भी महिलाओंको आए होंगे परंतु समाज और परिववार के भय से अपने अनुभव समाज के सामने उजागर करने से डरती और जीवन भर घुटन में जीती है। समाज की ऑखे खोलने के लिए ऐसे अनुभव सामने आने की जरूरत हैं।''[1] लेखिका ने अपनी व्यथा के माध्यम से दलित स्त्रीयों की त्रासदी को उजागर करने का सफल एवं सराहनीस प्रयास किया हैं।

हमारी खोखली एवं दंभिक समाज व्यवस्था ने स्त्री को पुरूषों से कम महत्व, मान–सन्मान एवं अधिकार दिए हैं। इस वास्तविकता को कौशल्या जीने उजागर किया हैं। दहेजप्रथा, अज्ञान एवं दुषित परंपरा के कारण लडकी को बोझ एवं अभिशाप माना जाता है। लेखिका के मॉ को सात बेटियॉ और दो बेटे हो गये थे लेकिन दो बेटीयॉ और दो बेटे मर जाने के बाद पॉच बेटियॉ रह गयी थी।

इसी कारण वह अपने आप को कौसती थी, ''देवा मैने ऐसा कौन सा पाप किया था कि मेरे नसीब में लडकियॉ ही लिखी है।''[2] लडकियों को पापों के परिणाम के रूप में देखा जाता हैं इसी कारण स्त्री के साथ दुषित और असमानता का व्यवहार किया जाता हैं। वास्तव में देखा जाए तो महिला के हात में नही होता है पुत्र होना परंतु पुरूषों नें अपनी महत्ता को स्थापित करने के लिए सदैव स्त्री पर ही दोषरोपण किया है। लेखिका की मॉ पुत्र होने पे मिठाई बाठती है और पुत्री को पराया धन मानती है लेखिका ने अस्पृश्य होने की पीडा को पग–पग पर भोगा है। स्कुल, मंदिर, परिवार और समाज ने उनके साथ सौतेला व्यवहार किया उन्हें सदैव व्यवस्थाद्वारा इस बात का बोध होता था की वह अस्पृश्य हैं।

सामाजिकएवं धार्मिक कुरीति, कुप्रथाऍ, घृणित आचार विचार एवं अंधश्रद्धा का वास्तविक चित्रण आत्मकथा में किया है। अनंत काल से दलित वर्ग अ मानवीय एवं असंवेदनशीलता के जंजीरो मे जखडा हुआ है। इन जंजीरो को तोडने की प्रेरणा, व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाने का साहस लेखिका को डॉ बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्राप्त होता है, कौशल्या जी कहती है, ''आदमी कितना ही दृढ हो फिर भी सामाजिक बंधनो के आगे उसे झुकना पडता है। चाहे इच्छा हो या न हो, सामाजिक विरोध सहन करना ही पडता है।''लेखिका को भी अपने पति, परिवार, बेटो से विरोध सहना पडता है। शिक्षा ग्रहन करते समय लेखिका छुवा,छुत, उॅव नीच, जातियता और उपेक्षितता को भोगती है। लेखिका स्कुल में जाती तो उसे लोगो की घृणित, विक्षिप्त एवं विकृत मानसिकताका शिकार होना पडता लोग कहते थे देखो हरीजन जा रही है। दिमाग तो देखे इसका बाप भिखमंगा है और ये साईकल पर जाती है। उच्च वर्णीय औरत भी कौशल्य जी पर हसती थी।

आत्मकथा में बालविवाह एवं विधवा विवाह के कारण स्त्री के जीवन में आनेवाली त्रासदी को भी उजागर किया गया हैं। लेखिका की दादी बालविधवा है उनका पुनःविवाह मोडूक से हो जाता हैं। मोडूक अपनी दोनों पत्नीयों पर हीन भावना और खुद की अरूपता के कारण अत्याचार करता हैं। एक रात दादी बिना बताये अपने बच्चों के साथ चली जाती हे और संघर्ष करती हुई आत्मनिर्भर बनती है। लेखिका की दादी अत्यंत दृढनिश्चयी, साहसी, मेहनती है संघर्षशीलता के कारण वे दलित समाज के लिए एक आदर्श पात्र है। लेखिका ने देवेद्रकुमार के माध्यम से पुरूषों की घिनौनी, शोषित, खोखली एवं वासनांध मानसिकता को उजागर किया हैं। लेखिका का विवाह अंतरजातीय और परप्रांतीय बिहारी से हुआ। अन्य पुरूषों के समान ही व पत्नी को दासी मानता था उसे भी लगता था स्त्री का जीवन पति और परिवार के सेवा और अधिनता के लिए होता है। लेखीका ने जिस आकांक्षा से पढेलिखे लडके के साथ विवाह किया वह सारी आकांक्षा तुट–तुटकर चुर हो गई उनके पति से उन्हे दुख के आलावा कुछ नही मिला वह जिद्दी, घमंडी और क्रुर था वह मानता था पत्नी केवला खाना बनाने के लिए और शारिरीक भूख मिटाने के लिए ही होती है वह कहती है, ''देवेंद्र कुमार को पत्नि सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारिरीक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी।''[4] उनके पति ने कभी लेखिका के साथ मानवीय व्यवहार नही किया कभी कौशल्याजी की भावनाओं को नही समझा केवल अपने विचार थोपने

के अलावा कुछ नहीं किया पुरूषोकी धारना होती है कि स्त्री स्वतंत्र विचार करने में सक्षम नहीं होती. लेखिका कहती हैं, ''उसने मेरी इच्छा, भावना, खृशी, की कभी कद्र नहीं की। बात–बात पर गाली, वह भी गंदी–गंदी और हाथ उठाना, मारता भी था। बहुत कुर तरीके से उसकी बहनो ने मुझे बताया था कि वह मॉ–बाप, पहली पत्नी को भी पीटता था।''[5] इस तथ्य से पुरूषी मानसिकता उजागर होती हैकि वह किस तरह अपने पत्नी के साथ पशु जैसा व्यवहार करतै और उन्हें अपनी होतों की कठपुतली समझते है।

लेखीका के हिस्से में परिवार द्वारा तिस्कार, उपेक्षा तथ घृणा ही प्राप्त हुई पत्नी को गुलाम, बेसहाय, कमजोर तथा भोगवस्तु समझकर उसके साथ अविश्वासपुर्ण व्यवहार किया जाता है। पति का कौशल्य जी पर विश्वास नहीं था और जिस रिश्ते में विश्वास नही होता व रिश्ता कमजोर होता है। कौशल्य बैसंत्री कहती है, ''पेसे देवन्द्रुमार अपनी अलमारी में ताले में बंद रखता और रोज दूध और सब्जी के पैसे देता था, गिनकर। कभी–कभी देना भूल जाता। उसे याद दिलानी पडती थी। कभी कोई बात पुछने पर दस मिनट तक तो कोई उत्तर ही नहीं देता। उसके बाद चलते–चलते संक्षिप्त सा जवाब मिलता था। मेरे कपडे, चप्पल की सिलाई के लिए पैसे लेने में बहुत पीछे पडना पडता, तब पैसे देता था वे भी पुरे नही पडते थे। कभी नही भी देता। कहता अगले महिने में लेना। जब अगले महीने में पैसे देने की बात आती तब कुछ – न – कुछ कारण निकालकर झगडा करता। मारने दौडता गाली देता।''[6] देवेंन्द्र कुमार उसके साथ सदैव अमानवीय व्यवहार करता बाकी पुरूषों के समान ही स्त्रीयों का शोषण करने उसे अपमानीत करने मे वे अपना अधिकार मानता स्त्रीया आर्थिक रूप से दुसरों पर निर्भर होती है इसी कारण उसे सदैव अपने पति के अधिन होना पडता है। भारतीय स्त्रीयो के पास पति के अन्याय अत्याचार को सहन करने के बजाय या आत्महत्या करने के अलावा कोई पर्याय नहीं होता है परंतु कौशल्याजीने साहस से परिस्थिती का सामना किया अन्याय को सहन करने से इनकार कर दिया इसलिए वह अपने पति का घर छोडकर चली जाती है। और पति के खिलाफ कोर्ट में भी जाती है। कौशल्याजी का संपुर्ण जीवन संघर्षो से भरा है परंतु कठिन परिस्थितीमें भी वे डगमगाई नहीं अन्याय अत्याचार के विरोध में आवाज उठाती है और अन्य स्त्रीयों को भी अन्याय के विरांध में लढने का साहस भरती है।

दोहरा अभिशाप आत्मकथा में लेखिका ने दोहरे अभिशाप में जीनेवाली स्त्री का चित्र मात्र हि
नहीं किया अपितु शोषण, अन्याय, अत्याचार के विरोध में आवाज उठाने के लिए प्रेरित भी किया है। दलित स्त्री को पुरूषों के बंधनो से मुक्त करने का प्रयास किया है। महिला ओं को स्वाभिमानी, साहसी एवं आत्मिनिर्भर बनाने हेतू उन्होंने 'महिला समता समाज' नाम से संस्था बनाई। दलित महिलाओ के साथ होनेवाली असमानता, जाति के प्रती तिरस्कार एवं घृणा, दलित महिलाओं के प्रति पुरूषो की वासनांधता, दलितों को दास मानने की प्रवृत्ती आदि के कारण दलित महिलाये सदैव दबाव, भय एवं घुटन में जीवन जीने को मजबूर होती है। यैसे कुठित महिलाओं को सही रास्ता दिखाने का एवं उन्हे जागृत करने का प्रयास लेखिका ने किया है। लेखिका अपनी भूमिका में कहती है, ''अस्पृश्य समाज में पैदाहोने से जातियता के नामपर जो मानसिक यातनाएँ सहन करनी पडी इसका मेरे संवेदनशील मन पर असर पडामैने अपने अनुभव खुले मन से लिखे है। पुरूष प्रधान समाज औरतो का खुलापन बरदास्त नहीं करता। पति तो इस ताक में रहता है कि पत्नी पर अपने पक्ष को उजागर करने के लिए चरित्रहीनता का ठप्पा लगा दे। पुत्र, भाई एवं पति सब मुझ पर नाराज हो सकते है। परंतु मुझे भी स्वतंत्रता चाहिए की मैं अपनी बात समाज के सामने रख सकू। समाज की ऑखे खोलने के लिए ऐसे अनुभव सामने आने की जरूरत है'' लेखिकानें परूष एवं समाज के द्वरा होनेवाले विकृतियों एवं घृणा को समाज के सामने लाने का साहस किया है जो सराहनीय है। महिलाए इज्जत के डरसे चरित्रहिनता के आरोप से बचने के लिए एवं अपने बच्चों के भविष्य के लिए पुरूषों द्वारा होनेवाले अन्याय तथा उनकी वासनाधंता के विरोध में आवाज नहीं उठाती कौशल्य जी कहती है अगर वासनांध एवं लंपट पुरूषो के विरोध में स्त्री खडी नही होगी, आवाज नहीं उठायेगी तो लंपटो का मनोबल बढ जायेगा और वह अधिक अत्याचार करेगा इसलिए अन्याय को सहन करने के बजाय अपमान, तिरस्कार और असमानता के विरोध में स्त्रीयों को सामने आने का मनोबल देने का प्रयास लेखिका करती है।

'दोहरा अभिशाप' यह आत्मकथा दलित स्त्रीयों पर होनेवाले अत्याचार की और उससे उभरकर संघर्षकरती स्त्री की आत्मकथा हैं। अपनी कथा और व्यथा के माध्यम से महिलाओं को सचेत, आत्मनिर्भर, दृढ एवं प्रगतीशील बनाने का कार्य लेखिका ने किया है। पति, घर–परिवार, समाज व्यवस्था इन सभी द्वारा प्रताडित एवं अपमानित दलित स्त्री को विकास एवं परिवर्तन के राह पर आने के लिए प्रेरित करनेवाली यह आत्मकथा है। पुरूष सदैव यह चाहता हैं कि स्त्री उसके बंधनो में दासतापूर्ण जीवन जीए। परंतु जबतक इस विक्षिप्त,

अमानवीय एवं विकृत बंधनो को तोडा नही जायेगा तबतक स्त्री आत्मनिर्भर एवं साहसी नहीं होगी। लेखिका नेतो अपने पति के अन्याय अत्याचार, शोषण एवं अपमान से मुक्ती पाकर विकास के रास्ते पर अग्रेसर होकर अपनी क्षमता एवं योग्यता को स्थापित किया एक नई ऊँचाईयोंका अनेको विरोधे के बावजुद आत्मसात किया लेखिका का यही कार्य अन्य दलित महिलाओं को प्रेरणा, उत्साह एवं साहस प्रदान करता हैं।

इस आत्मकथा के द्वारा लेखिका जातिव्यवस्था के बंधनो को तोडने का प्रयासस करती है। जातिव्यवस्था ने संपूर्ण समाज व्यवस्था को विषैला एवं घृणित बना दिया हैं। जातिव्यवस्था के कारण ही मानव पशु जैसे व्यवहार कर रहा है। मानवता, संवेदना, दया, क्षमा जैसे भाव भी जातियता के कारण जहरिले बन गए हैं। मुनुष्य को वैचारिक एवं नैतिक दृष्टि से पतीत बनाने का कार्य इसी जातिव्यवस्था ने किया है। लेखिका जातिव्यवस्था के बंधनो को तोड मानवता की स्थापना केवल विचारों से नहीं करती तो प्रत्यक्ष कृती द्वारा भी करती हैं वह अपने लडके एवं लडकियों का विवाह अंर्तजातिय एवं अंर्तधार्मिय करती है। समाज व्यवस्था से जातियता एवं धर्माधंता समाप्त नहीं होगी तबतक शोषणमुक्त समतामूलक समाज की स्थापना नही होगी इसका सराहनीय प्रयास लेखिका करती है। 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा मात्र दलित स्त्रीयों की वेदना नहीं है अपितू समाज की सारी नारियों की वेदना है। यह आत्मकथा दलित, उपेक्षित, वंचित एवं शोषित स्त्रियों को संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसंत्री, पृ–103
2.वही, पृ. 11.
3.वही, पृ. 39.
4.वही, पृ. 106.
5.वही, पृ. 104..
6.वही, पृ. 104.